imma™

Amar Ujala

3-D maping technic

Date: 18-02-2010 | Edition: Delhi | Page: 9 | Source: Bureau | Clip size (cm): W: 8 H: 15

Clip: 1 of 1

3-डी मैपिंग तकनीक से सामान्य हुईं असामान्य धड़कनें

पूर्वी दिल्ली। स्कॉटलैंड निवासी डेनॉन पिछले बीस सालों से असामान्य हार्ट बीट यानि 'एरिदमिया' की समस्या से पीड़ित थे। जिंदगी और मौत के बीच झूलते डेनॉन का मैक्स बालाजी अस्पताल में 3-डी मैपिंग तकनीक ने इलाज किया गया। जिससे डेनॉन पूरी तरह से स्वस्थ होकर अपने देश लौट सके। चिकित्सकों की मानें तो इलाज तो दूर, अमूमन असामान्य हार्ट बीट (धड़कन) के कारणों का ही पता नहीं लग पाता। लेकिन 3-डी मैपिंग तकनीक इस बीमारी के इलाज में कारगर साबित हो रही है।

सेहत

आमतौर पर एरिदमिया के कारण का नहीं लग पाता है पता

असामान्य हार्ट बीट के कारण हार्ट अटैक का खतरा बढ़ जाता है। असामान्य हार्ट बीट यानि 'एरिदमिया' के 30 फीसदी मामलों के लिए अनुवांशिक कारण और अंगों के बनावट में विकृतियां जिम्मेवार होती हैं। वहीं 70 फीसदी मामलों के लिए उच्च रक्तचाप, क्रोनिक बीमारियां व पूर्व में हुई हृदय की सर्जरी समेत कई अन्य कारण जिम्मेवार होते हैं। एरिदमिया में मरीज की धड़कने तेज चलने लगती हैं, सांस फूलना, सीने में दर्द, एंजिमा, नर्वसनेंस समेत तमाम दिक्कतें आती हैं। ब्लड प्रेशर असामान्य रहता है और हार्ट अटैक का खतरा बढ़ जाता है। मैक्स बालाजी अस्पताल में एरिदमिया एंड इलेक्ट्रो फिजियोलॉजी विभाग के निदेशक डॉ मोहन नॉयर ने बताया कि आमतौर पर यह बीमारी पकड़ में ही नहीं आती है। इलाज के समय मरीज के हृदय की 3-डी मैपिंग की जाती है और कार्य प्रणाली की गहन जांच कर एरिदमिया का कारण पता किया जाता है। उसके बाद मरीज को लोकल एनिस्थिशिया देकर मरीज का इलाज दुष्प्रभाव रहित रेडियो फ्रीक्वेंसी से किया जाता है। प्रभावित हिस्से को एक विशेष फ्रीक्वेंसी की रेडियो वेव के माध्यम से उपचारित किया जाता है।